



## संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि "ग्लोबल लीडर्स फाउंडेशन, नई दिल्ली" प्रकृति, पर्यावरण एवं परिस्थितिकी संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए "नदी बचाओ" परियोजना पर सक्रियता से कार्य करने जा रहा है।

सनातन भारतीय संस्कृति ने नदियों को लोकमाता और देवी के प्रतिष्ठित पद पर अभिषिक्त करते हुए उनकी परिकल्पना प्रकृति द्वारा सतत विकसित एवं परिमार्जित होते पथ पर कल-कल की सुमधुर ध्वनि के साथ प्रवाहित अविरल जीवंत जलधारा के रूप में की है। ऋग्वेद के "नदी-स्तुति सूक्त" में नदियों की महिमा का निदर्शन करते हुए कहा गया है –

“सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तुवक्षणीः ।  
देवीरापो मातरः सूदयित्न्वो घर्तवत पयोमधुमन नो अर्चत ॥” (10.64)

भारतीय संस्कृति के इसी मूल तत्व को आत्मार्पित करते हुए हमारे संविधान का अनुच्छेद 51(क) भी स्पष्ट व्यवस्था देता है कि – “भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दया भाव रखे।” लेकिन नदी कछार के प्रतिकूल विकसित होते भूगोल, ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्षा की कम एवं अनियमित मात्रा के साथ गैर-मानसूनी प्रवाह की कमी, अनुपचारित गंदगी एवं कचरे के नदियों में निस्तारण, रासायनिक कृषि में प्रयुक्त जहरीली दवाओं तथा नदी तट के अवैज्ञानिक उत्खनन के कारण नदी एवं कछार की सेहत निरंतर विकृत हो रही है। नदी प्रवाह की अविरलता सुनिश्चित रहने तक ही उसका पानी स्वच्छ, निरापद तथा प्रदूषण मुक्त रहता है। उसकी खुद-ब-खुद साफ होने की नैसर्गिक क्षमता बरकरार रहती है एवं तभी तक नदी जैव-विविधता से परिपूर्ण रहती है।

नदी की निर्मलता के लिए अविरल प्रवाह आवश्यक है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार नदियों की अविरलता एवं निर्मलता के लिए 'नमामि गंगे' तथा 'नदी जोड़ो' जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग से कार्य कर रही है। मुझे प्रसन्नता है कि "ग्लोबल लीडर्स फाउंडेशन" जैसे संस्थान भी इस पुनीत कार्य को स्व-प्रयासों से आगे बढ़ाने में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं। मैं संस्थान को उसके निष्ठावान एवं रचनात्मक प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं साधुवाद प्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')



सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा ।